International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 179-188

भारतीय सन्दर्भ में जनसंख्या का महिला रोजगारपरक मूल्यांकन

डॉ. मधुसूदन त्रिपाठी*
रूपाली चौधरी**

सार

भारत एक विराट मानव संसाधन वाला देश है, जिसकी अर्थव्यवस्था विकासशील एवं निम्न मध्यम आय वाली है। इसका अन्यतम कारण महिलाओं की अर्थव्यवस्था में कम भागीदारी है। वर्तमान में भारत में महिलाएं सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखा रही हैं लेकिन फिर भी जनसंख्या के अनुपात में उनकी आर्थिक भागीदारी अपर्याप्त है। इसका कारण पुरुष प्रधान विचारधारा तथा जागरूकता का अभाव है। इस चुनौती को सभी क्षेत्रों में महिलाओं को समुचित भागीदारी देकर हल किया जा सकता है।

उद्देश्य

भारत में महिला जनसंख्या का रोजगार की स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन करना तथा रोजगारपरक भागीदारी को समुचित तथा सापेक्ष बनाने के सम्बन्ध में निष्कर्ष तथा सुझाव प्रस्तुत करना।

मुख्य बिन्दु

भारत में महिला जनसंख्या, विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी, जनसंख्या तथा पुरुष के सापेक्ष रोजगार में भागीदारी, महिला रोजगार के सम्बन्ध में निष्कर्ष तथा सुझाव।

शब्दकोश : *मानव संसाधन, अर्थव्यवस्था, महिला जनसंख्या, महिला रोजगार।*

प्रस्तावना

भारत, विश्व की प्राचीनतम तथा महानतम सभ्यता तथा संस्कृति का धारक है। भारत, विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवें स्थान पर है। इसके उत्तर दिशा में सर्वोच्च हिमालय तथा दक्षिण दिशा में हिन्द महासागर है।[1]

हिन्द महासागर का नामकरण भारत के अन्य नाम हिन्दुस्तान के आधार पर हुआ है। मानव विकास सूचकांक में भारत का विश्व में 132 वां स्थान है।[2] लिंग असमानता सूचकांक में भारत का स्थान 135 वां है।[3]

प्राचीन काल से ही भारत में महिलाओं को विशिष्ट प्रतिष्ठा तथा अवसर प्रदान किए गए हैं। यह स्थिति शेष विश्व में दृष्टिगोचर नहीं होती। वर्तमान में भी भारत में महिलाएं सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्शा रही हैं, चाहे वह कार्यक्षेत्र हो या शासनक्षेत्र। भारत में सर्वोच्च पद राष्ट्रपति है। भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल रहीं तथा वर्तमान में भी द्रौपदी मुर्मू इस पद पर आसीन हैं।

---

* वाणिज्य संकाय, एस.एस.वी.(पी.जी.) कॉलेज, हापुड़, उत्तर प्रदेश।
** शोधार्थी, वाणिज्य संकाय, एस.एस.वी.(पी.जी.) कॉलेज, हापुड़, उत्तर प्रदेश।

भारत में प्रथम महिलाएं [4]

प्रथम महिला	नाम
भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री	इन्दिरा गाँधी
भारत की प्रथम महिला राज्यपाल	सरोजनी नायडु
भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री	सुचेता कृपलानी
भारत के उच्चतम न्यायालय की प्रथम महिला न्यायाधीश	फातिमा बीबी
भारत की उच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायाधीश	अन्ना चांडी
भारत की प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष	मीरा कुमार
भारत की प्रथम महिला केन्द्रीय मंत्री	अमृतकौर
भारत की प्रथम विश्व सुन्दरी	रीता फारिया
भारत की प्रथम मुख्य चुनाव आयुक्त	वी. एस. रमादेवी

भारत की जनसंख्या (2021) –

जनसंख्या	1.3 बिलियन
महिलाओं का प्रतिशत	48.04
महिलाओं की साक्षरता दर	70.3
जनसंख्या वृद्धि दर	1%
जन्म दर	17.4 प्रति 1000
मृत्यु दर	7.3 प्रति 1000

भारतीय जनसंख्या : लिंग, आयु वर्ग, ग्रामीण व नगर वार

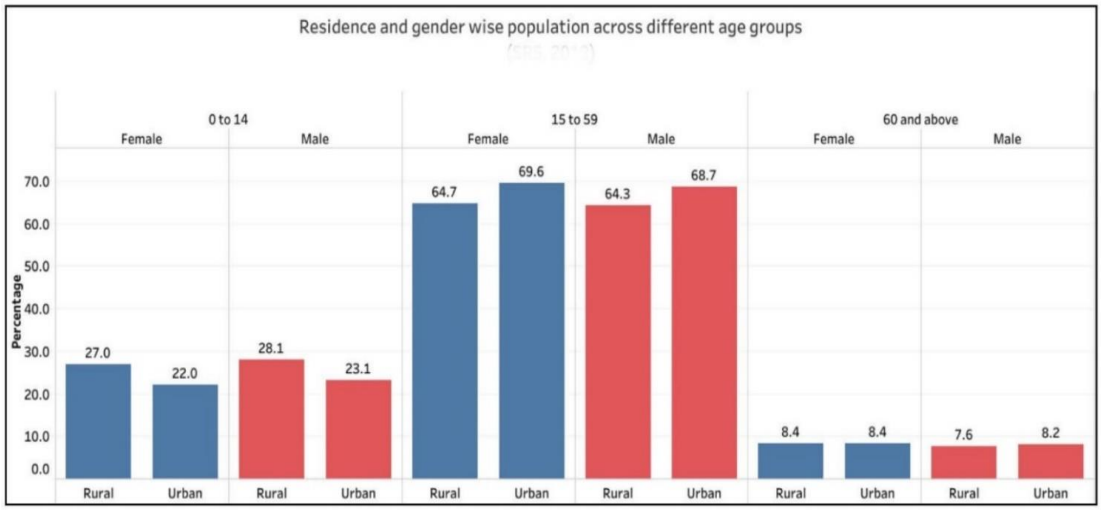

भारत में महिला साक्षरता

वर्ष	साक्षरता दर(प्रतिशत में)	महिला साक्षरता दर(प्रतिशत में)
1901	5.4	0.6
1911	5.9	1.0
1921	7.2	1.8
1931	9.5	2.9
1941	16.1	7.3
1951	18.33	8.86
1961	28.3	15.35
1971	34.45	21.97
1981	43.57	29.76
1991	52.21	39.29
2001	64.83	53.67
2011	74.04	65.46
2021	77.7	70.3

साक्षरता स्तर और शैक्षिक प्राप्ति, देश में विकास तथा रोजगार प्राप्ति के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। साक्षरता दर की गणना में 0–6 आयु वर्ग की जनसंख्या को कुल जनसंख्या से बाहर रखा जाता है। यह परिवर्तन 1991 में किया गया। सामान्यतः जो व्यक्ति लिखने और पढ़ने में सक्षम है उसे साक्षर माना जाता है। 1901 में देश में साक्षरता दर 5.4 प्रतिशत थी वहीं यह महिलाओं में मात्र 0.6 प्रतिशत थी। 1951 में दे ा की साक्षरता दर 18.33 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 8.86 प्रतिशत थी। वर्तमान में भारत की साक्षरता दर 77.7 प्रतिशत है जिसमें महिला साक्षरता दर 70.3 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि महिला साक्षरता दर, राष्ट्रीय साक्षरता दर से निरन्तर कम बनी हुई है।

भारत में महिला साक्षरता

राज्यवार (प्रथम में 07–59 वर्ष, द्वितीय में 60 से अधिक)

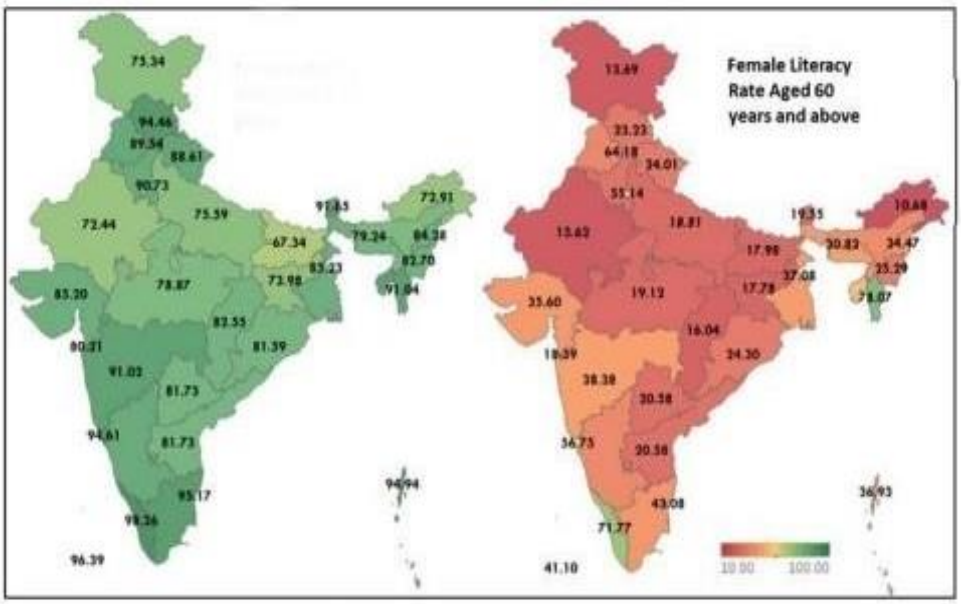

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

रंगराजन (2011) ने अपने अध्ययन में इस बात पर बल दिया कि महिलाओं का एक बड़ा भाग अपने घरेलू कर्तव्यों को पूरा करने के लिए रोजगार क्षेत्र से दूरी बना रहा है। जो यह दर्शाता है कि महिलाओं पर घरेलू तथा देखभाल सम्बन्धी दायित्व अधिक हैं।[5]

हिरवे (2012) ने तर्क दिया कि यह सम्भव नहीं है कि 40 प्रतिशत गरीबी के साथ 85 प्रतिशत ग्रामीण तथा 89 प्रतिशत नगरीय महिलाएं सवतेन कार्य से दूर रहें।[6]

रमेश और श्रीवास्तव (2014) ने अपने अध्ययन में बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के रोजगार से दूर होने का एक कारण गैर कृषि क्षेत्र में उनके योग्य रोजगार का अभाव भी है।[7]

वेरिक (2018) ने बताया कि कृषि का यन्त्रीकरण भी महिला श्रमिकों के लिए रोजगार की कमी का अन्यतम कारण है। इससे महिला कृषि श्रमिकों के प्रतिशत में कमी हुई है।[8]

चटर्जी (2018) ने बताया कि उच्च शिक्षित महिलाओं का विवाह सामान्यतः उच्च शिक्षित पुरुषों के साथ होता है। उच्च शिक्षित पुरुष अधिक आय अर्जित करते हैं तथा इसी कारण महिलाएं रोजगार से दूरी बना लेती हैं।[9]

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (2020) के प्रतिवेदन के अनुसार यदि भारत में कार्यक्षेत्र में व्याप्त लैंगिक असमानता को 25 प्रतिशत कम कर लिया जाता है तो इससे देश के सकल घरेलू उत्पाद में 1 ट्रिलियन डॉलर तक वृद्धि हो सकती है।

भारत तथा महिला रोजगार

भारत में महिलाएं विविध रोजगारों में सहभागिता कर रही हैं। यह भी एक तथ्य है कि महिलाओं पर घर संचालित करने का प्रमुख दायित्व है जोकि घर से दूर रोजगार करने में बाधक है। इण्टरनेशनल क्रॉप्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट फॉर द सेमी एरिड ट्रॉपिक्स सर्वेक्षण के रोजगार समंकों के अनुसार 32 प्रतिशत पुरुष ग्रामों से बाहर जाकर कार्य करते हैं, महिलाओं में यह केवल 5 प्रतिशत है। महिलाओं का सीमित व प्रतिबन्धित आवागमन तथा प्रव्रजन क्षमता घर से दूर रोजगार हेतु जाने में बाधक है। निर्माण एवं कम कुशल सेवाओं जैसे गैर कृषि क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता कम है क्योंकि यह रोजगार उनके ग्रामीण आवास से दूर हैं।

भारत में कृषि रोजगार क्षेत्र तथा महिलाएं

सामान्यतः मृदा की जुताई, फसल का उगाना तथा पशुपालन सम्बन्धी कार्य, कृषि रोजगार में सम्मिलित किये जाते हैं। मुख्य रूप से निम्नलिखित कार्य कृषि रोजगार का अंग हैं :

- परम्परागत खेती
- सब्जियों की खेती
- औषधीय खेती
- बागवानी
- पशुपालन
- मत्स्य पालन
- मुर्गी पालन
- केंचुआ पालन
- खाद निर्माण

आदि इन सभी कार्य में महिला कृषकों तथा श्रमिकों का बड़ा योगदान है।

डॉक्टर स्वामीनाथन का मत है कि महिलाओं ने ही सबसे पहले फसल को बोया और कृषि विज्ञान को आरम्भ किया। भूमि, जल, वनस्पति और जीव जन्तुओं जैसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वैश्विक स्तर पर भारत का दूध उत्पादन में पहला स्थान, अण्डा उत्पादन में तीसरा स्थान

तथा मुर्गी मांस उत्पादन में पांचवां स्थान है। पशुपालन के क्षेत्र में महिलाओं की प्रमुख भूमिका है। पशुओं की देखभाल, चारे की व्यवस्था, दूध निकालना तथा बेचना आदि इसमें शामिल है। महिलाएं गोबर से खाद बनाती हैं, फसल के अवशेषों के साथ गोबर मिलाकर ईंधन तैयार करती हैं। खाद निर्माण का आधुनिक आयाम केंचुआ खाद भी है। कुक्कुट तथा पशुपालन को महिलाओं का रोजगार क्षेत्र माना जाता है। जो परिवार के पोषण तथा आय का महत्वपूर्ण स्रोत है।

रेशम उत्पादन तथा महिलाएं

रेशम उत्पादन महत्वपूर्ण नकदी फसलों में से एक है। यह कृषि उद्योग पर आधारित है तथा अधिकांशतः महिलाओं द्वारा संचालित है। विश्व में भारत रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। देश के लगभग 69000 गांवों में रेशम का उत्पादन किया जाता है। रेशम उत्पादन में कुल श्रमशक्ति का लगभग 60 प्रतिशत महिलाएं हैं।

बागवानी तथा महिलाएं

बागवानी में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। फसल उत्पादन, फूल उत्पादन, पौध उत्पादन तथा अंकुर उत्पादन आदि महिलाकेन्द्रित लाभकारी रोजगार के क्षेत्र हैं।

वानिकी तथा महिलाएं

भारतीय ग्रामीण और आदिवासी जनसंख्या वनों पर निर्भर है। महिलाएं वनों से फल, मेवे, कन्द, मूल, सब्जी, रस, शहद, गोंद, दवा, बीज तथा लकड़ी एकत्रित करती हैं। वनों की रक्षा के लिए देश के उत्तराखण्ड राज्य में 1970 में हुए चिपको आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

चिपको आन्दोलन तथा महिलाएं

महिलाओं का वानिकी तथा कृषि वानिकी मूल्यश्रंखला में विशेष योगदान है। वानिकी का महिला रोजगार तथा आय में महत्वपूर्ण स्थान है। महिलाओं की यह आय उनके परिवारों की क्रय शक्ति में महत्वपूर्ण वृद्धि करती है।

ग्रामीण कुटीर उत्पादन तथा महिलाएं

इसके अन्तर्गत टोकरी, झाड़ू, चटाई, हाथ के पंखे, बांस के काम, लाख की खेती, पत्ती प्लेट निर्माण, रेशम कोकून पालन आदि छोटे पैमाने के उद्यम आते हैं। यह कार्य अधिकांशतः महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। इससे महिला बेरोजगारी का समापन होता है तथा प्राप्त आय से परिवार की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। कृषि और कृषक कल्याण मंत्रालय भारत सरकार ने अपने प्रतिवेदन 2020–21 में यह दर्शाया कि कुल कृषकों में 30.35 प्रतिशत तथा कृषि श्रमिकों में 40.67 प्रतिशत महिलाएं हैं। कुल परिचालन जोत का 13.95 प्रतिशत महिलाओं द्वारा संचालित किया जाता है।10

भारत में गैर कृषि रोजगार क्षेत्र तथा महिलाएं

गैर कृषि रोजगार क्षेत्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है–

- अकुशल क्षेत्र
- अर्धकुशल क्षेत्र
- कुशल क्षेत्र

अकुशल क्षेत्र

इस क्षेत्र में उन कार्यों को सम्मिलित किया जाता है, जिनके लिए किसी विशेष ज्ञान तथा कौशल की आवश्यकता नहीं है अपितु शारीरिक श्रम की आवश्यकता अधिक है। महिला श्रमिकों का एक बड़ा भाग इस क्षेत्र में कार्यरत है। घरेलू साफ–सफाई, भवन निर्माण, ईंट निर्माण आदि अनेक कार्यों में महिला श्रमिकों की पर्याप्त संख्या है।

अर्ध कुशल क्षेत्र

इस क्षेत्र में उन कार्यों को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हें अल्प प्रशिक्षण द्वारा सीखा जा सकता है। इसमें कारखानों में वस्तुओं का परिवेष्ठन, परिचारिका कार्य आदि आते हैं। इसमें अधिकांशतः महिलाएं ही कार्यरत हैं।

कुशल क्षेत्र

इस क्षेत्र में वे समस्त कार्य शामिल हैं जिनके लिए विशेष शिक्षण, प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अध्यापन, चिकित्सा, लेखांकन, अभियन्त्रण आदि को इसमें सम्मिलित किया गया है। इस क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति आनुपातिक रूप में कम है।

भारत में महिला प्रधान कार्यक्षेत्र

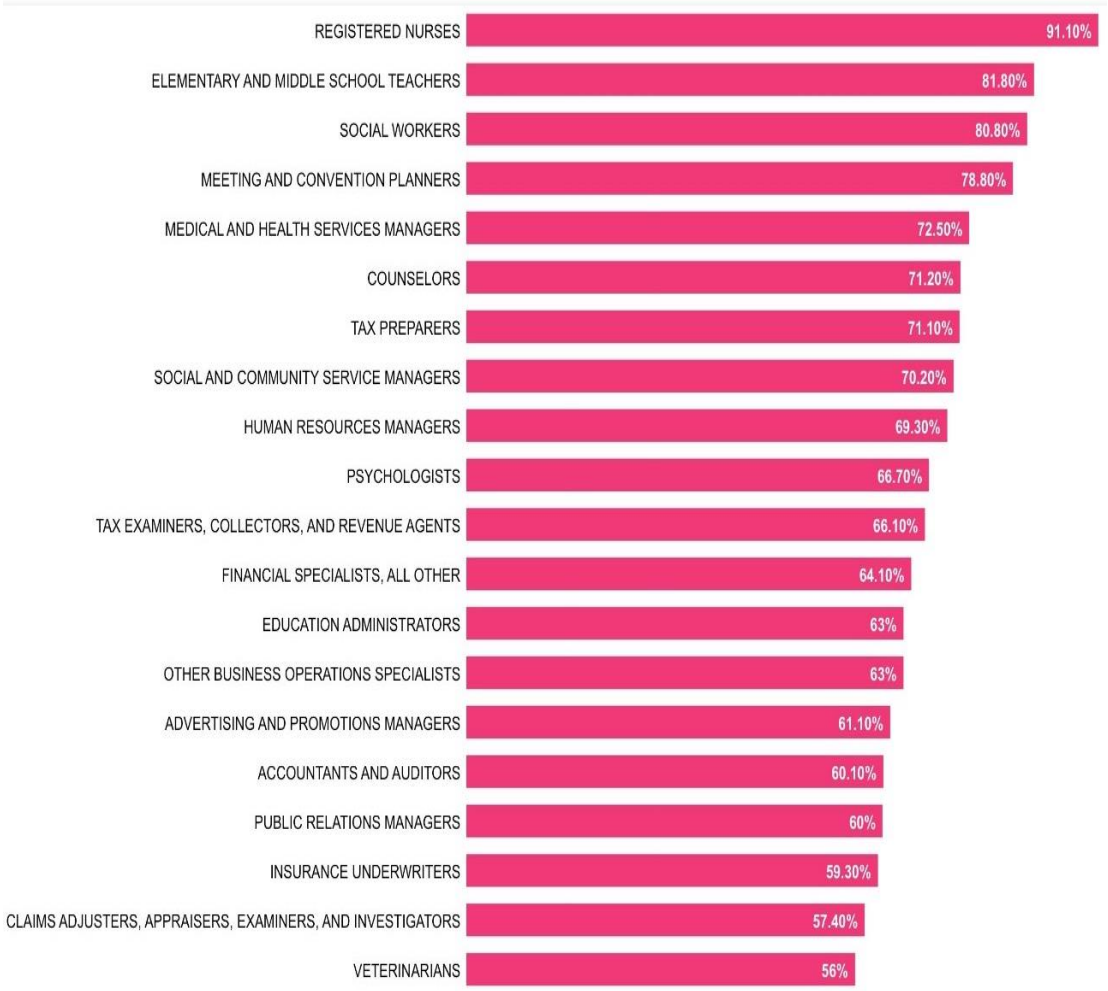

भारत में शीर्ष महिला उद्यमी

क्रम संख्या	कार्य	महिला उद्यमी
1.	वी एल सी सी संस्थापक	वन्दना लूथरा
2.	न्याका संस्थापक	फाल्गुनी नायर
3.	बायोकॉन लिमिटेड संस्थापक	किरण मजूमदार शॉ
4.	पार्क होटल चेयरपर्सन	प्रिया पॉल
5.	योरस्टोरी संस्थापक	श्रद्धा शर्मा
6.	मेनस्टुपेडिया सह-संस्थापक	अदिति गुप्ता
7.	जोश वार्ता संस्थापक	सुप्रिया पॉल
8.	शॉपक्लुज.कॉम सह-संस्थापक	राधिका घई अग्रवाल
9.	शहनाज हर्बल्स सीईओ	शहनाज हुसैन
10.	द फैशन डिज़ाइनर	रितु कुमार

भारत में प्रथम महिला कार्मिकः

भारत में प्रथम महिला	नाम
आई. ए. एस.	अन्ना राजम मल्होत्रा
आई. पी. एस.	किरण बेदी
डॉक्टर	आन्नदी गोपाल जोशी
सनदी लेखाकार	रामसामी शिवभोगम
विमानचालक	सरला ठकराल
वायु सेना लड़ाकू विमानचालक	अवनी चतुर्वेदी
सेना लड़ाकू विमानचालक	अभिलाषा बराक
रेलचालक	सुरेखा यादव
अभियन्ता	ए. ललिता
खनन अभियन्ता	आकांक्षा कुमारी

चिकित्सा क्षेत्र तथा महिलाएं

चिकित्सा, जीवन तथा स्वास्थ्य दायक क्षेत्र है। रोजगार की दृष्टि से इसमें चिकित्सक तथा परिचर्याकर्मी आते हैं। रोजगार के इस क्षेत्र में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी है। चिकित्सा परिचर्या के क्षेत्र में महिलाओं का लगभग एकाधिकार है।

विमान चालक तथा महिलाएं

- विश्व स्तर पर भारत में महिला विमान चालकों का प्रतिशत सर्वाधिक है।
- विश्व में कुल विमान चालकों में 5 से 8 प्रतिशत महिलाएं हैं, जबकि भारत में 12.4 प्रतिशत हैं।[11]

लेखांकन तथा महिलाएं

वर्तमान में भारत में लगभग 50000 सनदी लेखाकार हैं, जिसमें 22 प्रतिशत महिलाएं हैं।

रोजगार केन्द्र तथा महिला पंजीकरण [12]

निष्कर्ष

- भारत में कुल जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी 48.4 प्रतिशत है। यह संख्या, राष्ट्र के सन्दर्भ में महिला शक्ति के महत्व को दर्शाती है। यह महिला विराट शक्ति तभी सार्थक होगी जब इसे परिमाणात्मक तथा गुणवत्तात्मक रूप में सम्भावनापरक रोजगार उपलब्ध होगा।
- कार्यसक्षम महिलाओं को आयु के आधार पर 60 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक, दो वर्गों में बांट सकते हैं। दोनों वर्गों को रोजगार की दृष्टि से समुचित रोजगार उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।
- महिलाओं की शारीरिक संरचना तथा मनोदशा विशिष्ट होती है। यह विशिष्टता अनेक रोजगारपरक कार्य योजनाओं के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण हो सकती है।
- महिलाओं का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो कुशल है तथा कार्य करने की इच्छा रखता है किन्तु पारिवारिक दायित्व तथा बाध्यता के कारण घर को छोड़ कर नहीं जा सकता अथवा पूर्णकालिक रूप में कार्य नहीं कर सकता। ऐसी महिलाओं की क्षमता अप्रयुक्त पड़ी है।
- रोजगार के दौरान कार्यस्थल पर प्रतिकूल वातावरण तथा कार्यशर्तें महिलाओं को कार्य के प्रति हतोत्साहित करती हैं। जिसके कारण बड़ी संख्या में महिलाएं रोजगार से दूरी बना लेती हैं।
- महिला जनसंख्या का बड़ा प्रतिशत ग्रामीण तथा कस्बाई क्षेत्रों में रहता है। इन क्षेत्रों की रोजगार सम्भावनाएं तथा प्रकृति भिन्न है। इन क्षेत्रों की कार्य अपेक्षाओं पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।

- आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं के पास परम्परागत कौशल है, जो लुप्त होता जा रहा है। इस कौशल को संरक्षित तथा संवर्धित किए जाने की आवश्यकता है।
- महिलाओं की बड़ी संख्या ऐसी भी है जो रोजगार तथा धनार्जन के लिए कहीं भी जाने के लिए तत्पर है। ऐसी कार्य की इच्छुक महिलाओं पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।
- नगरीय क्षेत्रों में उत्पन्न हो रहे रोजगार के नए अवसरों को पहचानने तथा उसके अनुरूप कार्य योजना निर्मित करने की आवश्यकता है।
- विज्ञान तथा तकनीक के विकास के कारण नए उत्पादन एवं सेवाएं अस्तित्व में आ रही हैं। इस नवीन औद्योगिक प्रगति में अग्रता प्राप्त करने के लिए भारत में सर्वोत्तम मानव शक्ति निर्मित किए जाने की आवश्यकता है।

सुझाव

- भारत की जनसंख्या में महिलाओं का योगदान लगभग आधा है। इस विराट आधी जनसंख्या को अर्थव्यवस्था में सार्थक भूमिका प्रदान करने के लिए सुनिश्चित रोजगारपरक कार्ययोजनाएं निर्मित तथा क्रियान्वित की जानी चाहिए।
- कार्यसक्षम महिलाओं को 60 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक दो वर्गों में बांट कर देखा जाए तथा इन दोनों वर्गों की शारीरिक मानसिक क्षमताओं के आधार पर रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाए।
- महिलाओं की विशिष्ट शारीरिक संरचना तथा मनोदशा के अनुरूप सर्वोत्तम कार्य अपेक्षाओं की पहचान की जानी चाहिए तथा इसके अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निर्मित किया जाना चाहिए।
- ऐसी महिलाएं जो कुशल तथा कार्य करने की इच्छुक हैं परन्तु पारिवारिक दायित्व के कारण अंशकालिक रूप में घर में ही कार्य करना चाहती हैं, ऐसी महिलाओं के लिए, परिवार भी काम भी आधार पर अंशकालिक रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- कार्यस्थल पर महिलाओं के सन्दर्भ में प्रतिकूलता एक बड़ी चुनौती है। रोजगार में महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाने के लिए कार्यस्थल पर आवश्यक संरचनाएं तथा अनुकूल वातावरण व परम्पराएं प्राथमिकता के आधार पर निर्मित की जानी चाहिए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की सम्भावनाएं तथा कार्य अपेक्षाएं स्थानीय परिवेश के अनुरूप विकसित होती हैं। स्थानीय अपेक्षाओं के अनुसार रोजगार संभावनाओं को विकसित किया जाना चाहिए।
- आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा परम्परागत कौशल आधारित कार्यों द्वारा आय अर्जित की जाती है। यह स्वरोजगार का एक स्वरूप है। इस कौशल को सुरक्षित तथा संवर्धित किया जाना चाहिए ताकि आदिवासी समुदाय विशेषकर महिलाओं को उनके परिवेश में ही रोजगार मिल जाये।
- बहुत सी महिलाएं तथा पुरुष रोजगार के लिए देश विदेश में कहीं भी जाने के लिए तत्पर हैं। ऐसे कार्यशील वर्गो को पहचानने, पंजीकरण करने, कार्यस्थल पर भेजने, संरक्षण प्रदान करने की समुचित संरचना निर्मित की जानी चाहिए। ऐसे कार्यों में चिकित्सा परिचारिका, विमान परिचारिका, गृह परिचारिका आदि का उल्लेख किया जा सकता है। सरकार को विदेशों में इनके लिए रोजगार खोजने का सघन प्रयास करना चाहिए।
- देश में महानगरीकरण की प्रवृत्ति है। महानगरों के निर्माण के कारण नए प्रकार के रोजगार उत्पन्न हुए हैं। इन रोजगारों के लिए श्रम शक्ति निर्मित की जानी चाहिए। इससे महिला रोजगार में भी वृद्धि होगी।
- विज्ञान और तकनीक के कारण प्रगति के नए आयाम निर्मित हो रहे हैं। आधुनिकतम औद्योगिक क्षेत्रों में कार्य करने के लिए उत्कृष्ट बौद्धिक क्षमता वाली मानव शक्ति वांछित है। सरकार को अपनी जनसंख्या में से सर्वोत्तम बौद्धिक तथा शारीरिक क्षमता वाली महिलाओं एवं पुरुषों को छांटकर विश्व शक्ति बनाने के लक्ष्य के सन्दर्भ में नियोजित तथा प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि भारत तथा भारतवासियों का विश्व शक्ति तथा विश्व गुरु बनाने का सपना साकार हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत (2022), सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 19, नई दिल्ली
2. प्रतिवेदन, वैश्विक मानव विकास सूचकांक (2022), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यालय, न्यूयॉर्क
3. प्रतिवेदन वार्षिक (2022), विश्व स्वास्थ्य संगठन, न्यूयॉर्क
4. वेब पेज (2022), women's web, www.womensweb.com
5. रंगराजन (2011), वेयर इज द मिसिंग लेबर फोर्स ? इकॉनामिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 46(39), पृष्ठ 68 से 72, मुम्बई
6. हिरवे (2012), मिसिंग लेबर फोर्स एण्ड एक्सप्लेनेशन इकॉनामिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 45(33), पृष्ठ 67–72, मुम्बई
7. रमेश एण्ड श्रीवास्तव (2014), चेंज इन रूरल लेबर मार्केट एण्ड देयर एप्लीकेशन फॉर एग्रीकल्चर, इकॉनामिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 49(10), पृष्ठ 47–54, मुम्बई
8. वेरिक (2018), फीमेल लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन एण्ड डेवलपमेंट वर्ल्ड ऑफ लेबर, वॉल्यूम 2, द इन्स्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ लेबर, जर्मनी, बोन
9. चटर्जी एस, (2018) इण्डियन पैराडॉक्स लाइज इन एजुकेशन, डिक्लाइन इन वूमेन एम्पावरमेण्ट इण्डियन ह्यूमन डेवलपमेण्ट सर्वे 2018 यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड, मैरीलैंड
10. प्रतिवेदन वार्षिक 2021–22 कृषि एवं किसान कल्याण विभाग कृषि मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
11. जागरण दैनिक (2022), भारत में महिला पायलटों की संख्या दुनिया में सबसे अधिक, 12 अगस्त 2022 नई दिल्ली
12. प्रतिवेदन वार्षिक (2021), भारत सरकार, श्रम रोजगार मन्त्रालय, नई दिल्ली।

❖◆❖